अगर तुम युवा हो

कविता

शशि प्रकाश

स्मृतियों से कहो
पत्थर के ताबूत से बाहर आने को।

गिर जाने दो
पीले पड़ चुके पत्तों को,
उन्हें गिरना ही है।

बिसूरो मत,
ना ही ढिंढोरा पीटो
यदि दिल तुम्हारा सचमुच
प्यार से लबरेज़ है।

तब कहो कि विद्रोह न्यायसंगत है
अन्याय के विरुद्ध।

युद्ध को आमंत्रण दो
मुर्दा शान्ति और कायर-निठल्ले विमर्शों के विरुद्ध।

चट्टान के नीचे दबी पीली घास
या जज़्ब कर लिये गये आंसू के कतरे की तरह
पिता के सपनों
और मां की प्रतीक्षा को
और हां, कुछ टूटे-छलके निश्चयों और यादों को भी,
रखना है साथ
जलते हुए समय की छाती पर यात्रा करते हुए
और तुम्हें इस सदी को
ज़ालिम नहीं होने देना है।

रक्त के सागर तक फिर पहुंचना है तुम्हें
और उससे छीन लेना है वापस
मानवता का दीप्तिमान वैभव,
सच के आदिम पंखों की उड़ान,
न्याय की गरिमा
और भविष्य की कविता
अगर तुम युवा हो।